ख़ास ख़ोज-ख़बर

मसाई जनजाति के लोग एकेश्वरवादी हैं, एन्गई नाम के देवता की पूजा करते हैं

एक अनोखी जनजाति, दूध में मिलाकर पीती है खून, ये हैं दुनिया के सबसे लंबे लोग

● मंथन विदेश ब्यूरो

न्यूज डेस्क। दुनिया में खानपान और रहनसहन के अलग-अलग तरीके और मान्यताएं हैं। अफ्रीकी महाद्वीप तो सबसे अधिक विविधता भरा है। यहां एक ऐसी जनजाति है, जो जानवरों के दूध में खून मिलाकर पीती है। ये दुनिया के सबसे लंबे लोगों में से एक हैं।

दुनिया के अलग-अलग देशों और संस्कृतियों में खान-पान की भिन्न-भिन्न परंपराएं हैं। कहीं दूध से बनी चीजें खूब खाई जाती हैं, तो कहीं मांस मांस भोजन का अहम हिस्सा होता है। शाकाहार और मांसाहार को लेकर बहस तो चलती ही रहती है। आमतौर फूड हैबिड भौगोलिक परिस्थितियों पर निर्भर करती है। आज हम आपको अफ्रीका की एक ऐसी जनजाति के बारे में बताने वाले हैं, जो दूध में जानवर का खून मिलाकर पीते हैं और इससे मेहमानों का स्वागत भी करते हैं। दूध में खून मिलाकर पीने जैसी अजीब लगने वाली फूड हैबिट वाली जनजाति का नाम मसाई है। यह अर्द्ध-खानाबदोश जनजाति मुख्यत: दक्षिणी केन्या, उत्तरी तंजानिया और इथोपिया में निवास करती है। यह एक नीलोटिक जातीय समूह है।

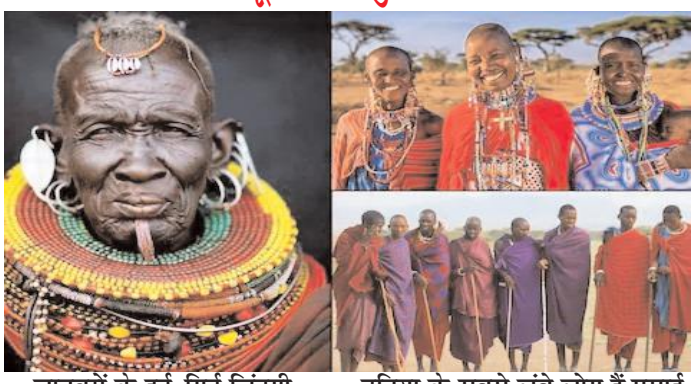

जानवरों के इर्द-गिर्द जिंदगी

मसाई जनजाति के लोगों का जीवन काफी हद तक जानवरों पर निर्भर होता है। सैकड़ों की संख्या में गाएं पालते हैं। मसाई जनजाति के पारंपरिक आहार में छह बुनियादी चीजें शामिल हैं- मांस, रक्त, दूध, फैट, शहद और पेड़ की छाल। वे ताजा दूध भी पीते हैं और कभी-कभी इसमें मवेशी का ताजा खून भी मिलाते हैं। दूध में खून मिलाकर आमतौर पर धार्मिक परंपराओं के दौरान पीते हैं। इसे मसाई लोग बीमार पढ़ने पर भी पीते हैं। ये लोग खून निकालने के लिए मवेशी के गले की नस को काटते हैं या उसे पंचर कर देते हैं।

दुनिया के सबसे लंबे लोग हैं मसाई

अफ्रीका की मसाई जनजाति के लोग दुनिया के सबसे लंबे लोगों में से हैं। मसाई जनजाति के लोगों की औसत लंबाई 190.5 सेमी/6.25 फीट है। लंबाई में इनकी बराबरी सिर्फ तुत्सी जनजाति के लोग ही कर पाते हैं।

किसकी पूजा करते हैं मसाई: मसाई जनजाति के लोग एकेश्वरवादी हैं। एन्गई नाम के देवता की पूजा करते हैं। मसाई जनजाति के एन्गई देवता के दो रूप हैं- एन्गई नारोक और एन्गई ना न्योकी। एन्गई नारोक हरी भरी घास और समृद्धि लाते हैं और एन्गई ना न्योकी अकाल और भूख लाते हैं। हालांकि अब बड़ी संख्या में मसाई लोगों ने ईसाई धर्म भी अपना लिया है।

जहां कदम रखो, मिलती हैं इंसानी हड्डियां!

यहां जलाया गया था 1 लाख 60 हजार लोगों को जिंदा... जहां कदम रखो, मिलती हैं इंसानी हड्डियां!

● मंथन विदेश ब्यूरो

पोवेगलिया द्वीप। साल 1960 में एक अमीर आदमी ने इस टापू को खरीद लिया था, लेकिन उसके परिवार के साथ भी कुछ हादसे हुए और उसने भी आत्महत्या कर ली। तब से इस द्वीप को शापित मान लिया गया। वैसे तो धरती पर एक से बढ़कर एक भूतिया जगहें हैं। कई तो इतनी ज्यादा खतरनाक होती हैं, जहां सरकारें भी न जाने की सलाह देती हैं। ऐसी ही एक जगह है, जहां कदम-कदम पर आपको इंसानी हड्डियां देखने को मिल जायेंगी। बताया जाता है कि यहां 1 लाख 60 हजार लोगों को जिंदा जलाया गया था।

सरकार ने लगा रखी है जाने पर पाबंदी

इटली के पोवेग्लिया आइलैंड के बारे में कहा जाता है कि यहां मौत का वास है और जो भी यहां जाता है वो वापस नहीं आता है। यूं तो दुनिया की भूतिया जगहों को टेस्ट करने के लिए लोग वहां जाते हैं। वही, इस आइलैंड पर जाने के हिम्मत कोई नहीं कर पाता। जो गए भी उनमें से कुछ तो वापस नहीं आ पाए या जो आए उनका कहना यही था कि यह आइलैंड अब शापित है। लोगों का कहना है कि यहां अजीब से आवाजें सुनाई देती हैं। इटैलियन सरकार भी यहां जाने वाले लोगों की गारंटी नहीं लेती है।

मिलते हैं इंसानी अवशेष: इटली के वेनिस और लिडो शहर के बीच मौजूद इस द्वीप को वेनेशियन खाड़ी भी कहा है। यह

टापू करीब 17 एकड़ के क्षेत्र में फैला है। कहा जाता है कि यहां की आधी जमीन इंसानी अवशेषों से बनी है। इसके इतिहास के बारे में बताया जाता है कि इटली में प्लेग की महामारी फैलने के दौरान सरकार ने महामारी को रोकने के लिए 1 लाख 60 हजार संक्रमित लोगों को इस टापू पर लाकर जला दिया था। इसके अलावा, ब्लैक फीवर बीमारी से मरे लोगों को भी इसी टापू पर लाकर दफना दिया गया था।

आइलैंड से आती हैं अजीब आवाजें

यहां एक अस्पताल भी था, लेकिन वह भी जल्दी ही बंद हो गया। इसके बाद साल 1960 में एक अमीर आदमी ने इस टापू को खरीद लिया था, लेकिन उसके परिवार के साथ भी कुछ हादसे हुए और उसने भी आत्महत्या कर ली। तब से इस द्वीप को शापित मान लिया गया।

स्पेशल खबर

यह किसी बड़े कुत्ते या सूअर तक को उठाकर उड़ सकता था

ऑस्ट्रेलिया में मिला लॉर्ड ऑफ द रिंग गरुड़, इसके पंखों का फैलाव 10 फीट था

● मंथन विदेश ब्यूरो

सिडनी। ऑस्ट्रेलिया में एक विशालकाय गरुड़ का जीवाश्म मिला है। यह एकदम नई प्रजाति का जीवाश्म है। इससे पहले इस गरुड़ के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। यह गरुड़ अब विलुप्त हो चुका है। लेकिन इसके पंखों का फैलाव 10 फीट था। यह किसी बड़े कुत्ते या सूअर तक को उठाकर उड़ सकता था। इस नई प्रजाति के गरुड़ का नाम है गाफ पावरफुल ईगल। इसका जीवाश्म दक्षिण ऑस्ट्रेलिया की एक 56 फीट गहरी गुफा में मिला है। जीवाश्म में इसके शरीर के हर अंग का सही आकार पता चल रहा है। क्योंकि जीवाश्म सुरक्षित स्थिति में है। इस जीवाश्म में गरुड़ के पंख, पैर, टैलोन्स, छाती की हड्डियां और खोपड़ी सुरक्षित मिली हैं।

इसके टैलोन्स 12 इंच लंबे थे। इसके पंखों का फैलाव 10 फीट था। यह अब तक ऑस्ट्रेलिया के इतिहास का सबसे बड़ा पक्षी माना जा रहा है। इसके बारे में रिपोर्ट हाल ही में जर्नल ऑफ ऑर्निथोलॉजी में प्रकाशित हुई है। इस रिपोर्ट को लिखने वाले फ्लिंडर्स यूनिवर्सिटी के वर्टिब्रेट पैलियोंटोलॉजिस्ट ट्रेवर वर्थी कहते हैं कि ये गरुड़ 50 हजार से 7 लाख साल पहले इस जमीन पर मौजूद था। प्राचीन समय में ऑस्ट्रेलिया में और भी विशालकाय पक्षी होते थे। लेकिन इनमें कई उड़ते नहीं थे।

जायंट कंगारू, मॉनिटर लिजार्ड, भालू जैसे दिखने वाले मार्सूपियल्स आदि। शोधकर्ताओं का मानना है कि ये विशालकाय गरुड़ इन बड़े जानवरों के बच्चों का शिकार करता था। ऐसे जीव जो 3 से 4 फीट ऊंचें या लंबे हों। यह गरुड़

हॉलीवुड फिल्म लॉर्ड ऑफ द रिंग्स में दिखाए गए गरुड़ जितना बड़ा तो नहीं था। लेकिन आकार ठीक था। आज के समय में ऑस्ट्रेलिया में जो वेज टेल्ड गरुड़ मिलते हैं, उनसे आकार में यह दोगुना बड़ा था। इसकी प्रजाति भी D. Gaffae के साथ ही विकसित हुई थी। लेकिन अपने बड़े आकार के चलते ये गरुड़ ज्यादा समय तक सर्वाइव नहीं कर पाए। हालांकि इनके शरीर का आकार एशिया के कुछ गरुड़ों से मिलता है। फिलिपीन ईगल बंदर, लेमूर और चमगादड़ों का शिकार करते हैं। या फिर छोटे सूअर या हिरण का। इनके ताकतवर पैर होते हैं। साथ ही शिकार करते समय ये अपने आकार और बड़े पंखों का फायदा उठाते हैं। फिलहाल सिर्फ दो ही विलुप्त गरुड़ों की प्रजातियों का पता चला है जो D.Gaffae से विशालकाय थे। इसमें से क्यूबा में बड़े चूहों का शिकार करता था। जिसका नाम था Gigantohiera& suarezi. दूसरा था न्यूजीलैंड जायंट हास्ट ईगल जो मरे हुए जीवों का सिर खाता था। इनके पंखों का फैलाव ऑस्ट्रेलिया में मिले गरुड़ के जीवाश्म से बड़ा था। D. Gaffae को साल 2021 में खोजा गया था। तब से इसकी स्टडी चल रही थी।

1979 से पहले वैज्ञानिकों को पता ही नहीं था कि गुरु ग्रह का कोई वलय भी है

गुरु ग्रह के पास क्यों नहीं है शनि कि तरह बड़ा वलय

● मंथन विदेश ब्यूरो

नासा। वैज्ञानिकों का मानना है कि गुरु ग्रह के पास शनि से भी ज्यादा बड़ा वलय होना चाहिए था। वैज्ञानिकों का मानना है कि गुरु ग्रह के पास शनि से भी ज्यादा बड़ा वलय होना चाहिए था। गुरु ग्रह के बारे में एक पहेली लंबे समय से वैज्ञानिकों को परेशान करती रही कि उसका शनि ग्रह की तरह वलय क्यों नहीं है। शनि से बहुत ही ज्यादा शक्तिशाली गुरुतव वाला ग्रह होने के बाद भी गुरु के पास शनि की तरह बड़ा नही बल्कि बहुत ही पतला वलय है। नए अध्ययन में बताया गया है कि गुरु ग्रह के चार सबसे बड़े ग्रह इसकी पीछे की वजह हैं।

सौरमंडल के हर ग्रह की अपनी

विशेषताएं हैं। लेकिन कुछ ग्रहों में काफी समानताएं भी खगोलविदों को आकर्षित करती हैं। पृथ्वी और शुक्र, पृथ्वी और मंगल, यूरेनस और नेप्च्यून, ऐसे ही कुछ जोड़े हैं। लेकिन कुछ ऐसे भी गुण हैं जो वैज्ञानिकों को इस बात के लिए भी हैरत में डालते हैं कि वे एक ही ग्रह में क्यों हैं। ऐसी ही एक विशेषता है शनि ग्रह का वलय । वैज्ञानिक लंबे से यह जानना चाहते थे कि शनि की तरह ऐसा वलय गुरु ग्रह का क्यों नहीं है। अब शोधकर्ताओं की टीम ने इस सवाल का जवाब खोज निकाला है।

बिना वलय के नहीं हैं गुरु ग्रह: यह सवाल इसलिए भी विचारणीय है कि गुरु ग्रह का गुरुत्व तो शनि से भी काफी ज्यादा है जिससे उसमें भी शनि कीतरह एक बड़ा वलय बनने की संभावना कुछ ज्यादा हो जाती है लेकिन फिर भी ऐसा नहीं हो सका। हकीकत यह है कि गुरू ग्रह का वास्तव में एक बहुत ही महीन और पतला छल्ला या वलय है। इसकी खोज साल 1979ल में नासाके वॉयेजर 1अंतरिक्ष यान ने की थी। मजेदार बात है यह है कि 1979 से पहले वैज्ञानिकों को पता ही नहीं था कि गुरु ग्रह का कोई वलय भी है।

---मंथन दृष्टि विज्ञापन दरें---

फुल पेज ब्लैक एण्ड व्हाइट	=	38000 रूपए
फुल पेज कलर	=	60,000 रूपए
हॉफ पेज ब्लैक एण्ड व्हाइट	=	19,000 रूपए
हॉफ पेज कलर	=	30,000 रुपए
क्वार्टर पेज ब्लैक एण्ड व्हाइट	=	10,000 रूपए
क्वार्टर पेज कलर	=	15,000 रुपए

नोट :-
1. ब्लैक एण्ड व्हाइट विज्ञापन का भुगतान 42 रूपए प्रति वर्गसेमी की दर से रहेगा।
2. कलर विज्ञापन का भुगतान 65 रूपए प्रति वर्गसेमी की दर से रहेगा।

ख़ास साप्ताहिक फ़ोटो

उत्तराखंड राज्य का विश्व प्रसिद्ध भगवान श्रीकृष्णजी का डांडा नागराजा मंदिर!

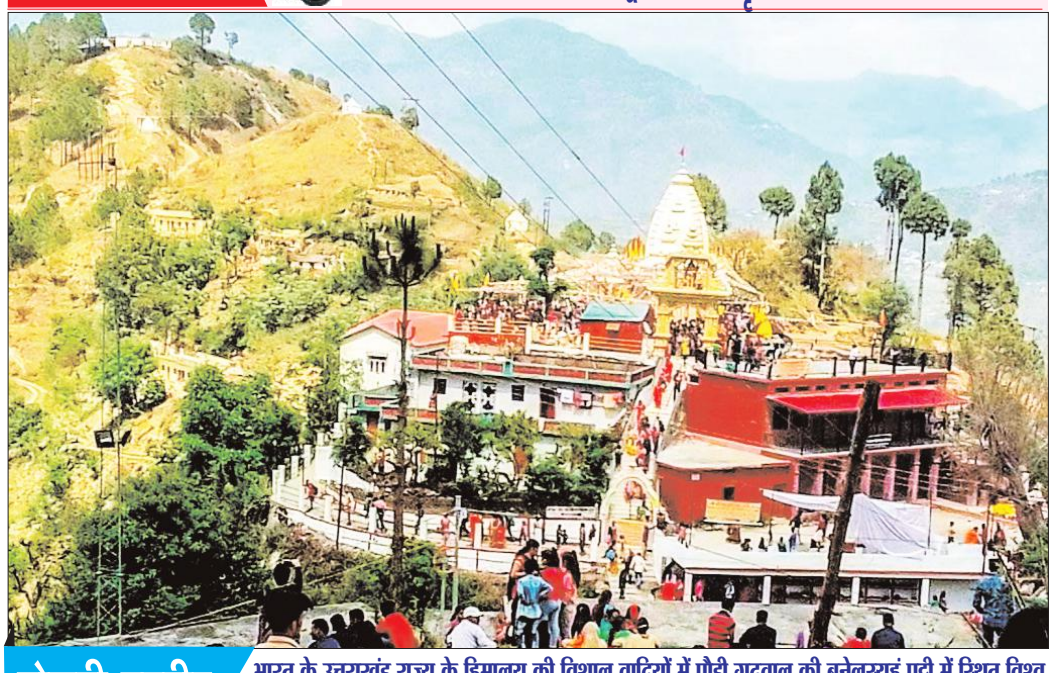

बोलती तस्वीर भारत के उत्तराखंड राज्य के हिमालय की विशाल वादियों में पौड़ी गढ़वाल की बनेलस्युहं पट्टी में स्थित विश्व प्रसिद्ध डांडा नागराजा मंदिर सदियों से अपनी अद्वितीय और अलौकिक कथाओं और मान्यताओं के कारण भक्तगणों के साथ-साथ देश-विदेश के पर्यटकों के बीच भी विख्यात मंदिर है। भारत में गढ़वाल मंडल को भगवान श्रीकृष्णजी का यह देवालय भक्तों तथा दर्शनाभिलाषियों का प्रमुख केन्द्र है। यह पौड़ी से 37 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, जहाँ जाने का मुख्य मोटर मार्ग ही है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ. रजत सक्सेना द्वारा जेयन ऑफसेट वर्क्स, 119, पुल बोगदा, भोपाल (म.प्र.)-462023 से मुद्रित एवं म.न. 31, सेक्टर-1, शक्तिनगर, भोपाल, मध्यप्रदेश-462024 से प्रकाशित। प्रधान संपादक डॉ. रजत सक्सेना, संपादक- महेश प्रताप जड़िया, सभी विवादों का न्यायक्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा।